माया मांझि मगरूरु, मूरख रहनि मति रे,
सति ज़ाणी संसार खे, सामी सहनि सूर,
कालु न ड्रिसनि कंध ते, थो करे नितु कलूरु,
राजा राव मजूर, मारे जंहिं मिटी कया.

संसार के मूर्ख/अज्ञानी मनुष्यों पर माया को कैसा प्रभाव पड़ता है, इसका वर्णन करते हुए सामी साहब कहते हैं कि मूर्ख मनुष्य माया के मोह-जाल में फँसकर अपनी मति/समझ गँवा कर अभिमानी/घमंडी हो गये हैं। इस मिथ्या, झूठे संसार को सत्य जानकर सभी मनुष्य नाना प्रकार के दु:ख सहते रहते हैं। भयंकर मृत्यु उनके कंधों पर आ बैठी है किन्तु अभिमान के कारण अंधे बने हुए वे मनुष्य मृत्यु को देख नहीं पाते। एक ऐसा काल (मृत्यु), जिसने राजा, राव, प्रजा, सरदार और मजदूर आदि सबको मार कर मिट्टी बना दिया है।

अविद्या, अज्ञान का एक अन्य नाम माया है। ईश्वर की आज्ञानुसार कार्य करने वाली उसी की कल्पित शक्ति भी माया है। धन, संपत्ति को भी माया कहा जाता है। सृष्टि का मुख्य कारण भी माया है। परमेश्वर के सत्य स्वरूप पर आवरण/पर्दा डालकर ढँक देने वाली भी माया है। माया के कारण ही जीव परमेश्वर को पहचान नहीं सकता। मनुष्य का मन माया से प्रभावित होकर ही सब कुछ सोचता और करता रहता है। मायाजन्य सभी वस्तुएँ नाशवान है। संसार में सभी दु:ख और चिंताएँ माया के कारण ही हैं। माया का एक रूप धन-दौलत भी है, जिसको पाने की इच्छा और कोशिश सभी मनुष्य करते रहते हैं। आज के समय में तो अर्थ को, माया के इस रूप को अत्यधिक महत्व प्राप्त हो गया है। हर कोई इसे पाने के लिए इसके पीछे बेतहाशा भागता हुआ दिखाई देता है। यही माया मनुष्य को अभिमानी, घमंडी, मगरूर और अंधा भी बना डालती है। यह सबको अपने मोह-जाल में फँसा कर बांध कर रखने वाली है। अज्ञानी और मूर्ख मनुष्यों पर माया का प्रभाव अधिक पड़ता है। यह उनकी मति/समझ ही छीन लेती है। उन्हें मानो अंधा कर देती है। परिणामत: वे अपनी मृत्यु की आहट भी सुन नहीं पाते, जो उनके बिल्कुल निकट आकर खड़ी हुई होती है। वस्तुत: काल (मृत्यु) किसी पर दया नहीं करता-चाहे व अमीर हो या गरीब!

काल फिरै सिर ऊपरै, हाथों धरी कमान।
कहै कबीर गहु ज्ञान को, छोड़ सकल अभिमान॥

■